भारतीय दर्शन

TDC Part-1

डॉ. विजय कुमार

दर्शनशास्त्र विभाग

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

चार्वाक दर्शन

नीतिशास्त्र

चार्वक दर्शन आचारमीमांसा (Ethics) के क्षेत्र में सुखवादी है। आचारमीमांसा या नीतिशास्त्र में मनुष्य के चरम लक्ष्य की प्राप्ति है तथा उन साधनों का भी विवेचन होता है जिनके द्वारा चरम लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। जो दर्शन सुख को चरम लक्ष्य मानता है उसे सुखवादी कहते हैं। चार्वाक दर्सन भी मानव जीवन के परम लक्ष्य अथवा श्रेय के रूप में सुख को ही प्रतिष्ठा देता है। चूँकि चार्वक दर्शन प्रमाण मीमांसा के क्षेत्र में प्रत्यक्षवादी तथा तत्त्वमीमांसा के क्षेत्र में जड़वादी है, इसलिए अपनी इन्हीं मान्यताओं के आदार पर सुखवाद का प्रतिपादन करता है। इसके लिए उसने जो कुछ कहा है वह इस प्रकार है–

अध्यात्मवाद का खण्डन

अध्यात्म यानी ईश्वरवादी यह मानते हैं कि ईश्वर ही सब कुछ है, वही जगत् का नियन्ता है। उसकी कृपा से जीव बन्धन मुक्त होता है और पुनः ईश्वर में मिल जाता है। सबकुछ ईश्वर की कृपा से ही होता है। चार्वाक इन सब को नहीं मानयता नहीं देता है–

- ईश्वर नहीं है, क्योंकि उसका प्रत्यक्ष बोध नहीं होता है।
- झड़ से भिन्न आत्मा नाम की कोई चीज नहीं है। वह जड़ के संयोग से ही उत्पन्न होता है और जड़ के वियोग से समाप्त भी हो जाता है।
- जीव शरीर की समाप्ति के साथ–साथ समाप्त हो जाता है। अतः स्वर्ग की इच्छा और मोक्ष की प्राप्ति में विश्वास निरर्थक है।

वैदिक कर्मकाण्ड निरर्थक है

वेदों में प्रतिपादिक यज्ञ, पशु बलि आदि कर्मकाण्ड करने वाले यह समझते हैं कि यज्ञ करने और पशु बलि देने से ऐसा समझते है कि यज्ञ करने वाले को पुण्य लाभ होता है और जिस पशु की बलि दी जाती है उसको मोक्ष की प्राप्ति होती है।

चार्वाक कहता है कि न स्वर्ग है, न अपवर्ग है, न आत्मा है, न परलोक और वर्णाश्रम आदि है तथा न उनके कर्म फल देने वाले हैं। यह सब धूर्त और निशाचरों की देन है। किसी व्यक्ति के मर जाने पर श्राद्ध कर्म के अन्तर्गत दान में दी गई वस्तु के विषय में पुरोहितों द्वारा यह कहा जाता है कि ये सब मृत आत्मा को प्राप्त होगा और उन्हें सुख-और शान्ति मिलेगी।

इसके विरोध में चार्वाक कहता है कि यदि ऐसा है कि श्राद्ध में दान की गई सामग्री मरे हुए व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है तो पथिक को पाथेय ले जाने की क्या आवश्यकता है। घर पर ही दान कर देने से पथिक को राह में तुष्टि मिल जाती। दूसरी बात यह कि यज्ञ में बलि देने से बलि दिए गए पशु को स्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है तो यजमाान क्यों नहीं अपने माता-पिता की बलि दे देते हैं। जिससे उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हो जाती।

दुःख के भय से सुख का त्याग गलत

भारतीय अध्यात्मवाद की मान्यता है कि दुःख से मुक्त होना ही मोक्ष कहलाता है। कुछ लोग सदेह मुक्ति में विश्वास करते हैं कुछ लोग विदेह मुक्ति में विश्वास करते हैं। चार्वक मानता है कि जीवन में न केवल दुःख है और न केवल सुख ही। दोनों का समिश्रण ही जीवन है। मृत्यु के बाद दुःख का अन्त हो जाता है और सुख मिलता है ऐसा समझना गलत है, क्योंकि मृत्यु के साथ जीव समाप्त हो जाता है। जीवन में ही दुःख से छुटकारा मिल जाए यह भी संभव नहीं है। अतः चार्वाक कहता है कि सुख की उपलब्धि ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

चार्वाक कहता है कि कि जो सुख हमें वर्तमान में मिल रहा है, जो सुख निश्चित है उसे इस आशा में नहीं छोड़ना चाहिए कि भविष्य में हमें स्वर्ग अथवा मोक्ष मिलने पर अत्यधिक सुख मिलेगा। कल मिलने वाले मयूर की आशा में आज हाथ में आए हुए कबूतर को नहीं छोड़ना चाहिए। यदि कोई ऐसा करता है तो वह भूल करता है। तात्पर्य हैं कि मोक्ष प्राप्त करने की आशा में वर्तमान जीवन के सुख को छोड़ देना महामूर्खता है।

सुख के सम्बन्ध में भी चार्वाक के दो वर्ग देखे जाते हैं- **धूर्त चार्वाक और सुशिक्षित चार्वाक**। धूर्त चार्वाक शारीरिक सुख अथवा निजी सुख में विश्वास करते हैं। इनका मानना है कि जब तक जीओ सुख से जीओ, यदि ऋण लेकर भी घी पीना पड़े, तो घी पीओ। क्योंकि यह देह भस्मीभूत होने वाली है। पुनर्जन्म की कोई बात नहीं है। अर्थात् सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करो।

सुशिक्षित चार्वाक सुख में गुण-भेद करते हैं और सुख की ऊँची और नीची श्रेणियाँ निर्धारित करते हैं। उदेश्य ऐसा होना चाहिए कि सामाजिक जीवन पर कोई आँच न आए। ऐसे आचरण वाले को चार्वाक ने राजा माना है।